

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

SEVA-DHAM HOSPITAL

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies



SEVA-DHAM HOSPITAL

K. H.-57, Ring Road, Behind Indian Oil Petrol Pump, Sarai Kale Khan,
New Delhi-110013. Ph. : +91-11-26320000, 26327911 Fax : +91-1126821348
Mobile 9999609878, 9811346904, Website : www.sevadhham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से
मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रुपये
फरवरी, 2011

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



पतझर की बिदाई
बसन्त की शहनाई।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 02 फरवरी, 2011

: मार्गदर्शन :		इस अंक में	
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी		01. आर्ष वाणी	- 5
: सम्पादक :		02. बोध कथा	- 5
श्रीमती निर्मला पुगलिया		03. संपादकीय	- 6
: परामर्शदाता :		04. गुरुदेव की कलम से	- 7
डॉ. राजाराम 'अबोध'		05. चिंतन-चिरंतन	- 14
: सह सम्पादक :		06. गीतिका	- 16
श्री मनोज कुमार		07. कहानी	- 17
: व्यवस्थापक :		08. भजन	- 19
श्री अरुण तिवारी		09. मंगल को पृथ्वी...	- 20
एक प्रति	: 5 रुपये	10. गजल	- 21
वार्षिक शुल्क	: 60 रुपये	11. हमारा प्रयावरण	- 22
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये	12. चुटकुले	- 23
: प्रकाशक :		13. स्वास्थ्य	- 24
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)		14. बोलें तारे	- 26
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240		15. समाचार दर्शन	- 28
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के		16. संवेदना-स्मृति	- 28
सामने, नई दिल्ली - 110013		17. झलकियां	- 30
फोन नं.: 26315530, 26821348			
Website: www.manavmandir.com			
E-mail: contact@manavmandir.com			

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
 डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
 श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
 श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
 श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैकाक
 श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
 श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
 श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
 श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
 श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
 श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंधी, सरदार शहर
 श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनू
 श्री भंवरलाल उम्पेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
 श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
 श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
 श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
 श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
 श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
 श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
 श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
 श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री वीरवल दास सिंगला,
 श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
 श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
 श्री देवकिशन मून्डडा विराटनगर नेपाल
 श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
 श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
 डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास

डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
 डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
 श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
 श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
 श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
 श्री प्रवीण लता मेहता ह्युष्टन
 श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
 श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
 श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
 श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
 श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
 डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
 श्री कमलसिंह-विमलसिंह वैद, लाडनू
 श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
 श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
 श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
 श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
 डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
 श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
 श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
 श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
 श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
 श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
 श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
 श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
 श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
 श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
 लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
 श्री आदीश कुमार जी जैन,
 न्यू अशोक नगर, दिल्ली
 मास्टर श्री वैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

देहिनोस्मिन् यथा देहे, कौमारं यौवनं जरा,
तथा देहान्तर प्राप्तिर्धीर स्तत्र न मुह्यति।

—श्रीमद्भगवद्गीता

जैसे आत्मा में स्थित शरीर में शैशव, यौवन और वृद्धावस्था आती है वैसे ही एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण किया जाता है, जिसे मृत्यु कहा जाता है। इसमें मोहाकुल बनने की क्या बात है? यह तो आत्मा का रूपान्तरण है।

एक मुट्ठी आटा

काशी के एक गुरुकुल में कई छात्र अध्ययन करते थे। गुरुकुल के नियमों के अनुसार शाम को सभी छात्र अलग-अलग दिशाओं में भिक्षाटन के लिए चले जाते और एक वक्त के भोजन के बराबर आटा-दाल लेकर लौटते थे, तभी भोजन बनता था।

एक बार एक छात्र एक सेट के दरवाजे पर पहुंचा। बाहर से ही उसने भिक्षा मांगी। सेटानी थी तो दयालु लेकिन उसका स्वभाव कर्कश था। वह अंदर से ऊंची आवाज में बोली, 'फिर आ गया कोई भिखमंगा। ठहर मैं आती हूं।' वह एक कटोरा में थोड़ा आटा और दाल लेकर बाहर आई और छात्र को देने लगी। छात्र ने सेटानी के कटोरे का आटा दाल लेने के लिए अपना थैला आगे नहीं किया। सेटानी कुछ क्षण खड़ी रही, फिर बोली, 'अब क्यों नहीं लेता।'

जवाब में छात्र ने अपना थैला समेटा और उठ कर जाने लगा। सेटानी ने समझा कि भीख कम होगी तभी वह नहीं ले रहा है। वह बोली, 'ठहर, अभी आती हूं।' छात्र रुक गया। सेटानी दोबारा एक थाली में पहले से ज्यादा आटा-दाल लेकर आई और बोली, 'अब तो कम नहीं है न। थैला आगे कर।' लेकिन छात्र ने इस बार भी भिक्षा नहीं ली। सेटानी को क्रोध आ गया। बोली, 'चला है भीख मांगने और बना है धन्नासेट।' वह फिर घर के अंदर गई और एक बड़ी थाल में आटा, दाल, चावल के साथ कुछ रुपये रख कर ले आई और बोली, 'अब कम नहीं है। इतना मैं किसी को भी नहीं देती।'

इस बार छात्र बोला, 'सेटानी जी, मेरा काम तो एक मुट्ठी आटे से चल जाएगा। मैं इतना ज्यादा लेकर क्या करूंगा। लेकिन एक मुट्ठी आटे के साथ यदि आप की प्यार भरी मीठी बोली भी मिल जाए तो इस आटे से बनी रोटी में स्वाद बढ़ जाएगा। कटु वचन से दी गई भिक्षा मिट्टी के समान बेस्वाद होती है। उसे लेकर मैं क्या करूंगा।' सेटानी को अपनी गलती का अहसास हो गया। उसने छात्र से क्षमा मांगी।

उत्साह और स्फूर्ति का पर्व है मकर संक्रांति

भारत छहः ऋतुओं का देश है। प्रत्येक ऋतु का अपना एक अलग महत्व, अपनी एक अलग शान एवं पहचान है। भारत की प्रत्येक ऋतु का समय प्रायः दो-दो महीने का होता है। चैत्र और वैशाख में बसंत, ज्येष्ठ और अषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण और भाद्रपद में वर्षा, अश्विन व कार्तिक में शरद, मार्गशीर्ष तथा पौष में हेमंत, माघ और फाल्गुल में शिशिर भारत के प्रायः सभी स्थानों पर ये ऋतुएं अपनी-2 छटा दिखाकर सबको आनन्दित करती हैं। माघ एवं पौष की कड़कती सर्दी के पश्चात भारतीय प्रांगण में मौसम खुशगवार हो जाता है। भारी भरकम ऊनी कपड़ों से निजात मिलती है। और लोग मजा लेते हैं खुले नीले आसमान का। विभिन्न फूलों की मिश्रित सुगन्ध से सराबोर बसंती पवन का और दूर-2 तक फैले पवन की तान पर सिर हिलाकर नृत्य करते हैं लोग सरसों के खेतों का माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसंत ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है। इस समय प्रकृति सौलह कलाओं से हार-श्रंगार पहन कर यौवन की पराकाष्ठा पर होती है। और अपने इस सौंदर्य पर इटलाती एवं दंभ भरती है।

ऋतुराज बसंत के राग-रंग निराले हैं। महानगरीय स्वरूप में भले ही बसंत थोड़ा परिवर्तित हुआ हो, परन्तु अपने मनोवैज्ञानिक प्रभाव के चलते बसंत सभी को लुभाता जरूर है। इसी प्रभाव के फलस्वरूप भारत के प्राचीन साहित्य में बसंत की महिमा का खूब बरवान किया गया है।

प्राचीन काल से ही भारत में बसंतोत्सव का वर्चस्व रहा है। हमारे प्राचीन काव्यों, नाटकों तथा आख्यानों में बसंतोत्सव और मधुमास के सूक्ष्म एवं कालात्मक संदर्भ स्पष्ट दृष्टिगोचर लेते हैं। बसंत के आगमन से ही नहीं अपितु पूरी प्रकृति, गहरे अर्थों में प्रतिसंवेदित होती है। प्राचीन संदर्भों पर नजर डालें, तो हमारे ग्रंथों में 'मदनोत्सव' का सर्वाधि एक वर्णन आया है। भोज के प्राचीन ग्रंथ 'सरस्वती कंठाभरण' में इस त्यौहार का मार्मिक वर्णन किया गया है। 'हरिभक्ति विलास' में ली बसंत पंचमी के दिन ही बसंत का अभिभाव माना गया है। कामदेव की पूजा के महापर्व बसंतोत्सव के संदर्भ में महाकवि कालिदास के 'ऋतुसंहार' में भी खूब जालित्य पूर्ण वर्णन मिलता है। बसंतोत्सव की महिमा का उल्लेख 'गरुडपुराण' में भी है कि अगहन-त्रयोदशी से यह उत्सव प्रारम्भ होकर कार्तिक मदन त्रयोदशी को समाप्त होती है। यही नहीं इस महीने में शिव के विविध स्वरूपों अथवा मूर्तियों के पूजन की भी अपनी अलग महत्ता है।

'रत्नावली' में इस पर्व का उल्लेख 'बसंतोत्सव' एवं 'मदनोत्सव' दोनों नामों से मिलता है। हर्षदेव ने 'रत्नावली' नाटिका में उत्सवों के सार्वजनिक एवं अंतःपुरिकाओं के पिनोप का रंजन रूपों का सजीव वर्णन किया है।

○ निर्मला पुगलिया

युद्ध मजबूरी है, जीवन-शैली नहीं



सीमांत चौकियों पर अपनी सेवाएं देकर सैनिक अपने घर पर छुट्टियां मनाने आया है। एक बार प्रवचन के बाद उसने बड़ा अहम सवाल उठाया— जिस अहिंसा की इतनी महिमा आप गा रहे हैं, उस अहिंसा से क्या देश की रक्षा सम्भव है? मैं अभी-अभी सीमा से लौटा हूँ। सीमा पर भारी तनाव है। दुश्मन-सेना का दबाव वहां दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। हमारे कश्मीर पर उसकी गिद्ध-नजर है। पंजाब में आग लगाने के लिए वह बराबर हाथ-पांव मार रहा है। इन दुश्मन सेनाओं

की पीठ पर पश्चिम-शक्तियों का पूरा हाथ है। वे भारत को शक्ति के रूप में उभरता हुआ नहीं देखना चाहती है। संकट की इस घड़ी में अहिंसा की चर्चा कितनी प्रासंगिक है? क्योंकि अहिंसा किसी प्रकार के युद्ध या हिंसा की इजाजत नहीं देती है। इस स्थिति में दुश्मन सेनाओं को क्या सीमा में घुसने दिया जाए? क्या देश को दुश्मनों के हाथों में सौंप दिया जाए?

बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल उठाया है, आपने, मैंने उनसे कहा। एक ओर देश की रक्षा का प्रश्न है, दूसरी ओर अहिंसा का। यह सही है अहिंसा युद्ध को इजाजत नहीं देती है। इसके साथ यह भी सही है कि अहिंसा देश को दुश्मनों के हाथों में सौंपने की इजाजत भी नहीं देती है। अहिंसा के लिए युद्ध की इजाजत देना इसलिए सम्भव नहीं है क्योंकि युद्ध में भयंकर नर-संहार होता है। देश को दुश्मनों के हाथों में सौंपने की इजाजत भी अहिंसा इसलिए नहीं देती है क्योंकि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा हर कीमत पर अनिवार्य है। गुलामी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं होता।

युद्ध के बारे में अहिंसा का यह चिन्तन दुहरा लग सकता है। किन्तु ऐसा है नहीं। इसे दो टूक समझने के लिए हमें हमारे राष्ट्रीय जीवन में अहिंसा और युद्ध की भूमिका पर विस्तार से समझना होगा।

युद्ध-एक मजबूरी

युद्ध के विश्लेषण में हम पाएंगे कि युद्ध राष्ट्र की मजबूरी होता है। कोई भी देश युद्ध चाहता नहीं। क्योंकि युद्ध में हानि ही हानि होती है। युद्ध में हारने वाला तो नुकसान में

रहता ही है, जीतने वाला भी लाभ में नहीं रहता। दोनों ओर ही नर-संहार होता है। दोनों ओर खून की नदियां बहती हैं दोनों ओर बच्चे अनाथ होते हैं, दोनों ओर स्त्रियों के माथे के सिन्दूर मिट जाते हैं। खेतों में लहलहाती फसलें फौज के बूटों और रेंगते हुए टैंकों तले बर्बाद हो जाती है। देश का सारा वैभव एक तरह से दांव पर लग जाता है, देश पर आर्थिक संकट भी गहरा हो जाता है। युद्ध अगर लम्बा खिंच जाए तो दीवालेपन की स्थिति बन जाती है। इस तरह युद्ध विनाश का ही दूसरा नाम है। किन्तु उस हानि और विनाश को भी स्वीकार करना पड़ता है क्योंकि देश की अस्थिरता की रक्षा का बड़ा प्रश्न सामने जो होता है।

सारी हानियों के बावजूद हम देश-रक्षा के प्रश्न को नजर-अन्दाज नहीं कर सकते। हर देशवासी का प्रथम और अन्तिम कर्तव्य होता है कि वह देश की अस्मिता की रक्षा हर कीमत पर करें। क्योंकि देश बचेगा तो व्यक्ति और समाज बचेगा। देश बचेगा तो उसका गौरव और वैभव बचेगा। देश बचेगा तो बच्चों का भविष्य बचेगा। देश बचेगा तो अबलाओं का सिन्दूर बचेगा। देश बचेगा तो धर्म बचेगा। अगर देश ही नहीं होगा, तो ये सब कहां होंगे। इसलिए देश की रक्षा में अहिंसा का कोई विरोध नहीं है। किन्तु इन सबके बावजूद हम इस तथ्य को नहीं भुला सकते कि युद्ध राष्ट्र की मजबूरी होता है। और न चाहते हुए भी उसे पूरी गम्भीरता से युद्ध को स्वीकारना होता है।

मजबूरी जीवन शैली नहीं बन सकती

युद्ध एक मजबूरी है। मजबूरी आखिर मजबूरी होती है। वह कभी जीवन शैली नहीं बन सकती। युद्ध एक आवेश है, तक तनाव है। आवेश और तनाव को लम्बे समय तक कभी नहीं जिया जा सकता।

व्यक्ति हो या समाज और देश, जीवन शैली अहिंसा ही बन सकती है। आवेश और तनाव से मुक्ति भी अहिंसा में ही सम्भव है। कोई भी देश निरन्तर युद्ध में रह कर अपना विकास नहीं कर सकता। देश के सामने जितना बड़ा प्रश्न अपनी रक्षा का होता है, उससे भी बड़ा प्रश्न अपने निर्माण और प्रगति का होता है। देश खुशहाल हो, उसकी उत्पादन क्षमता बढ़े शिक्षा का विस्तार हो, उद्योगों का फैलाव हो, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में नए आविष्कार हों, उपलब्ध संसाधनों का पूरा उपयोग हो, सबको न्याय मिले, जीवन-आयामों पर तभी ध्यान दिया जा सकता है, जब देश में अमन-चैन हो, सुख-शान्ति का वातावरण हो। और अमन-चैन तभी सम्भव है जब देश में अहिंसा और प्रेम का वातावरण हो। इस

प्रकार यह एक स्वयं सिद्ध तथ्य है कि अहिंसा ही जीवन-शैली बन सकती है, हिंसा कभी नहीं।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य का आहार है अहिंसा

राष्ट्र को स्वस्थ रखने के लिए अहिंसा उसका आहार है। शरीर को स्वस्थ और पुष्ट रखने के लिए जैसे प्रतिदिन आहार की जरूरत होती है, वैसे ही राष्ट्रीय शरीर को स्वस्थ और समृद्ध रखने के लिए अहिंसा जरूरी है। लेकिन कभी शरीर बीमार हो जाए, उस समय हम दवा का सेवन भी करते हैं। रोग के समय आहार कम हो जाता है, किसी-किसी रोग में आहार बन्द भी करना होता है। उस स्थिति में विशेषतः दवा का सेवन होता है और दवा के अनुरूप ही पथ्य-सेवन होता है, उसी प्रकार युद्ध भी एक रोग है। उस रोग का प्रतिकार करने के लिए देशवासियों को दवा के रूप में शस्त्र उठाने पड़ते हैं। किन्तु जैसे दवा रोग-शमन में भले ही काम आए, वह प्रतिदिन के आहार का स्थान नहीं ले सकती, वैसे ही शस्त्र-हिंसा युद्ध में भले ही अनिवार्य हो, वह प्रतिदिन के राष्ट्रीय जीवन में अहिंसा का स्थान नहीं ले सकती।

फिर युद्ध राष्ट्रीय जीवन का केवल एक पहलू है। यह राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा से जुड़ा हुआ पहलू है, इसलिए बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है। पर यह एक पहलू है, सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन नहीं है। इसलिए समग्र चिन्तन में उसका स्थान रोग-निवारण में दवा जितना-सा ही हो सकता है, इससे अधिक नहीं।

यहां दो बातें और विचारणीय हैं। जिस किसी विवाद को लेकर दो देशों के बीच युद्ध टनता है, उस विवाद का निपटारा भी अन्ततः शांति वार्ता में ही होता है। युद्ध में निपटारा लगभग नहीं होता। इतना अवश्य होता है जो भीतर आवेश या उत्तेजना होती है, युद्ध में उसका विरेचन हो जाता है। किन्तु उसका हल शांति-वार्ता में ही निकल पाता है। इसका अर्थ यही हुआ, युद्ध-हिंसा केवल शक्ति-प्रदर्शन के लिए होती है। सरहद पर शांति बारूद से नहीं, अहिंसा और युद्ध विराम से ही होती है।

दूसरे में, पड़ोसी राष्ट्र अहिंसा को परस्पर सहमति से पूर्ण निष्ठा के साथ स्वीकार कर ले, जैसा कि युद्ध के बाद उसी रास्ते पर आना पड़ता है, तो युद्ध की स्थिति ही उत्पन्न न हो। न रहे बांस, न बजे बांसुरी। हिंसा के बिना राष्ट्र का निर्माण, प्रगति, सुख-शांति सब सम्भव हैं, अहिंसा के बिना नहीं।

निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता है राष्ट्र के सर्वतोमुखी विकास एवं निर्माण में अहिंसा ही प्रासंगिक है। युद्ध केवल तभी प्रासंगिक है जब देश की स्वतन्त्रता खतरे में हो। उस खतरे से देश की रक्षा करना हर देशवासी का अनिवार्य कर्तव्य भी हो जाता है। किन्तु है वह मजबूरी ही। मजबूरी कभी भी जीवन-शैली नहीं बन सकती। अहिंसा जीवन-शैली है, इसलिए वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती।

क्या दुश्मन को मारना धर्म नहीं है?

वह सैनिक भाई सुशिक्षित था। उसकी मुख-भंगिमा से लग रहा था वह मेरे विचारों से कुछ-कुछ आश्वस्त सा लग रहा है तो प्रश्नाकुल-सा भी नजर आ रहा है। उसने बन्दूक की गोली की तरह फिर प्रश्न दागा- हम हिंसा-अहिंसा के झमेले में नहीं पड़ना चाहते। हम अपना एक ही धर्म मानते हैं वह हैं, वह है दुश्मन को मारना। हमारी सोच में दुश्मन को मार गिराने से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। क्या आप इससे सहमत हैं?

आपको किसी झमेले में जाना भी नहीं चाहिए, मैंने कहा। क्योंकि सोच-विचार आपका विषय नहीं है। यह चिन्तकों-विचारकों का विषय है। आपका विषय है देश की सीमाओं की रक्षा करना। उसमें किसी सोच-विचार को कोई स्थान होना भी नहीं चाहिए। आपकी यह सोच भी बिल्कुल सही है कि एक सैनिक का सबसे बड़ा कर्तव्य दुश्मनों से देश की रक्षा करना ही होता है।

अब रही बात, दुश्मन को मार गिराना धर्म है। राष्ट्रीय सन्दर्भ में यह प्रश्न ठीक हो सकता है। मानवीय सन्दर्भों में इस सिद्धांत से सहमत नहीं हुआ जा सकता। उस सन्दर्भ में हर इन्सान, पहले इन्सान है, बाद में वह किसी देश-विशेष का नागरिक है। इसलिए इन्सान-इन्सान को मारे इसे उचित कैसे माना जा सकता है। अब यदि यह कहा जाए कि वह हमारा दुश्मन है, इसलिए उसे मारना धर्म है तो इस तर्क को उल्टा करके देखेंगे, तो जैसे वह हमारा दुश्मन है, वैसे हम भी उसके दुश्मन हैं। तो फिर दुश्मन को मारना परम धर्म है, इस सिद्धांत के तहत हम उसे मारें, तो धर्म होता है, वैसे ही वह हमें मारे, तो उसे भी धर्म होना चाहिए। यद्यपि हर देश में अपने नागरिकों को दिन-रात यही सिखाया जाता है कि दुश्मन को मारना धर्म है। किन्तु यह सिद्धांत देश-रक्षा तक ही लागू होता है, उससे आगे मानवीय परिवेश में यह खंडित हो जाता है। हर योद्धा एक दूसरे को दुश्मन होता है। दुश्मन का खून बहाना धर्म होगा, फिर तो अधर्म जैसा कुछ रहेगा ही नहीं। क्योंकि खून सदा दुश्मन का ही बाहाया जाता है, मित्र का नहीं।

युद्ध युद्ध है, अहिंसा अहिंसा

अहिंसा और युद्ध- राष्ट्रीय जीवन में दोनों की अपनी-अपनी भूमिकाये हैं। बल्कि कहना चाहिए, युद्ध तो केवल देश-रक्षा के सन्दर्भ में आवश्यक है, जबकि अहिंसा जीवन के सभी सन्दर्भों में नितांत आवश्यक है। युद्ध के बिना पूरे विश्व-जीवन का काम बड़े आराम से चल सकता है, अहिंसा के बिना एक दिन भी काम नहीं चल सकेगा। सच्चाई यह है आज की मानव जाति अहिंसा का संकल्प ले ले, तो युद्ध की परिस्थिति ही उत्पन्न न हो।

युद्धों के इतिहास का अध्ययन करने पर हम पायेंगे कि लगभग युद्ध एक व्यक्ति या जाति की निरंकुश महत्वकांक्षाओं के कारण ही लड़े जाते रहे हैं। आदमी अपनी महत्वकांक्षाओं के लिए हजारों लाखों लोगों का खून बहा दें, इसे क्या जंगल की संस्कृति नहीं कहना चाहिए। जबकि जंगल की संस्कृति भी यह नहीं है। वहां भी पशु अपनी पेट की भूख शान्त करने के लिए कमजोर जानवर को मारता है। और भूख शान्त हो जाने के बाद शेर के सामने से हिरण भी गुजर जाए, तो भी वह नहीं मारेगा। सामूहिक संहार का तो कभी प्रश्न ही नहीं उठता। एक यह आदमी है, जो अपने को विश्व का सर्वोत्तम प्राणी मानता है, अपने को सुसभ्य और सुसंस्कृत मानता है, और दूसरी ओर अपनी एक मामूली सी सनक में, अपनी निरंकुश महत्वकांक्षाओं के लिए भयंकर नर-संहार करवाने में भी नहीं हिचकता है। द्वितीय विश्व युद्ध इसका ज्वलंत उदाहरण है। एक निरंकुश हिटलर अपनी जातीय महत्वकांक्षाओं पर अपना अंकुश रखता तो क्या लाखों निर्दोष लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता? क्या इस भीषण नर-संहार को बर्बर सभ्यता न माना जाए?

सुना है मैंने, रण-भूमि से वापस लौटते हुए एक बार सेना की एक टुकड़ी जंगल में रास्ता भूल गई। सही रास्ता पाने के लिए उन्होंने एक आदिवासी को अपने साथ लिया। वह जंगलों में ही रहता था। तन ढकने को पेड़ की छाल तथा जानवरों का कच्चा मांस ही उसका भोजन होता। रास्तों में सैनिक लोग असभ्य और जंगली कहकर उसकी जाति का उपहास करने लगे। बातों ही बातों में उस आदिवासी ने पूछा- आपने पड़ोसी देश पर हमला क्यों किया? सैनिकों ने बताया पड़ोसी देश का मजहब अलग है। उसने हमारे देश के मजहब की निन्दा की। हमने उन पर हमला करके हजारों को मौत के घाट उतार दिया। हजारों को बन्दी बना लिया। उस आदिवासी ने आश्चर्य से कहा- इतनी छोटी-सी बात के लिए इतना बड़ा बर्बर नर-संहार? और फिर आप अपने को सभ्य और विकसित मानते हैं? इससे तो हम जंगली और असभ्य ही अच्छे हैं, जो पेट-पूर्ति के सिवाय किसी की भी जान

नहीं लेते किसी भी बात का हल तो बात से ही निकल सकता है, उसके लिए इतना बड़ा नर-संहार क्यों?

उस आदिवासी का यह कथन अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले देशों की समझ में शायद न भी आए, किन्तु इसमें बहुत बड़ी सच्चाई है, यह तो मानना ही होगा। लगभग युद्धों के पीछे बातें बहुत साधारण-सी होती हैं, जिनको आमने-सामने बैठकर बड़े सुखद वातावरण में सुलझाया जा सकता है। उनके लिए भयंकर रक्तपात और नर-संहार का रास्ता लेना बर्बर और जंगली सभ्यता ही कहलाएगा। परस्पर सद्भावनामूलक वातावरण में सम्पन्न होने वाली वार्ताएं प्रायः समस्याओं का सफल समाधान खोज लेती हैं। इसके उपरांत भी समाधान न निकले तो भी नर-संहार को टालने के उपाय मिल सकते हैं। ऐसे प्रयोग मानव सभ्यता के आदि युग से होते आए हैं, जिनके उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं, और वे आज भी हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं।

रक्त-पात-रहित युद्ध

मानव सभ्यता के प्रवर्तक भगवान आदिनाथ ने जब देखा, मानव-समाज की व्यवस्था सुचारू ढंग से चलने लगी है, असि, मसि और कृषि में नियत वर्ग अपने-अपने नियत कर्म में प्रवृत्त हो गए हैं, सब ओर सुख शांति और समृद्धि का वातावरण है, तब भरत, बाहुबलि आदि पुत्रों, को अलग-अलग राज्य देकर वे स्वयं संन्यास मार्ग पर चल पड़े।

भरत के मन में चक्रवर्ती बनने की महत्वाकांक्षा जगी। अपनी सेना के साथ उसने अपना अश्व चारों दिशाओं में भेजा। सभी राजाओं ने भरत की अधीनता स्वीकार कर ली। बाहुबलि की सेना ने घोड़े को पकड़ लिया। दोनों भाइयों में तर्क-वितर्क चले। भरत का कहना था, जब और सभी राजाओं ने अधीनता स्वीकार ली है, तब आने भाई को चक्रवर्ती का सम्मान पाने में भाई बाहुबलि को सहयोग करना चाहिए। भाई का सम्मान उसका अपना सम्मान है। उधर बाहुबलि का तर्क था, पिताजी ने अपने सभी पुत्रों में ज्येष्ठ मानते हुए जैसे भी भरत को विशाल राज्य का मालिक बनाया है। अब वह अपने छोटे भाइयों के राज्यों को भी हड़पना चाहता है। यह उसकी साम्राज्य-लिप्सा है। इस लिप्सा में सहयोग का प्रश्न ही नहीं उठता, मैं इसका डटकर विरोध करूंगा। इसके लिए युद्ध भी लड़ना पड़ा तो पड़ूंगा।

आखिर युद्ध के लिए दोनों सेनाएं आमने-सामने आ गईं। युद्ध में भयंकर रक्तपात की आशंकाओं से देव-मानव सब कांप उठे। परम्परा का कहना है युद्ध को रोकने के लिए

देव-गण आगे आए। सचमुच में वे देव ही होते हैं जो हिंसा, रक्त-पात और नर-संहार को रोकने की कोशिश करते हैं। उन्होंने दोनों भाइयों को कहा- अब जय पराजय का निर्णय शक्ति बल से तो होना है ही। किन्तु हम चाहते हैं वह शक्ति-परीक्षण केवल आप दोनों के बीच हो जाए। इससे जय पराजय का निर्णय भी हो जाएगा। इसके साथ ही भीषण रक्त-पात भी बच जाएगा। निर्दोष लोगों की जानें भी नहीं जाएगी। दोनों भाइयों ने यह परामर्श मान लिया। बात-बात में युद्ध का मैदान जैसे खेल का मैदान हो गया, जिसमें दोनों भाइयों को अपना जौहर दिखाना था।

उस द्वन्द्व-युद्ध का परिणाम क्या रहा, यह प्रस्तुत सन्दर्भ में प्रासंगिक नहीं है। यहां प्रसंग इतना ही है कि मानव-सभ्यता ने अपने आदि काल में भी रक्त-पात रहित युद्ध पर चिंतन किया है। यह उदाहरण इसका साक्षी है। हम आज सभ्यता के चरम शिखर तक पहुंचने के दावे कर रहे हैं। फिर भी हम अपने आपसी विवादों के लिए खून की होली खेलें, इसे पशु संस्कृति से कम क्या कहा जा सकता है।

युद्ध-एक अवांछनीय कर्म

मानव जाति के लिए युद्ध से बचकर कोई अवांछनीय कर्म नहीं हो सकता। फिर कोई जाति, मजहब या राष्ट्र अपनी निरंकुश सोच अथवा सियासती दांव-पेच के कारण किसी दूसरे देश पर आक्रमण करें, यह तो सर्वथा निंदनीय है ही। केवल राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए युद्ध की अनिवार्यता को स्वीकारना पड़ता है। यदि ऐसा आवश्यक न हो तो जहां मनुष्य मनुष्य के ही खून का प्यासा हो जाए, अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए हजारों बच्चों को अनाथ बनाए हजारों स्त्रियों का सुहाग छीने, हरी-भरी धरती की कोख को राख बना दे, उस युद्ध का समर्थन कैसे किया जा सकता है।

युद्ध कभी विवाद का हल नहीं होता है। वह मात्र एक उत्तेजना है, एक आवेश है, एक उफान है, एक उन्माद है। इसे रोकना इसलिए अनिवार्य होता है जिससे देश की स्वतंत्रता को कोई खतरा न हो। किन्तु हर समस्या का स्थायी हल अहिंसा में ही सम्भव है। अहिंसा राष्ट्र का शृंगार है, विकास और प्रगति का आधार है, स्वस्थता बनाए रखने का आहार है और अहिंसा में ही सम्पूर्ण मानव-जाति की अखण्ड स्वतंत्रता का विस्तार है। अहिंसा आदमी के कद को बहुत ऊंचा उठा देती है। युद्ध आदमी को बोना बना देता है। अहिंसा के सामने युद्ध खुद ही बोना है। बौने की ऊंचाई कैसी?

कोशा वेश्या और सिंह गुफा वासी मुनि



○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री
आचार्य संभूतविजय के चार शिष्यों ने चातुर्मास के लिए अलग-अलग स्थान पर आचार्य की आज्ञा चाही। एक मुनि सिंह की गुफा के द्वार पर ध्यानस्थ होकर चार महीने तपस्या में बिताना चाहते थे। दूसरे मुनि का आग्रह था कि मैं चार महीने सर्प की बाम्बी पर ध्यानस्थ खड़ा होकर तपस्या करूं। तीसरा मुनि कुंए की मुंडेर पर चार महीने तपस्या और ध्यान की साधना करना चाहता था। मुनि स्थूलभद्र गृहस्थ जीवन की पूर्व परिचित कोशा वेश्या

की रंगशाला में तपस्या करना चाहते थे।

गुरु ने चारों शिष्यों का मनोभाव देखकर उन्हें वहां चौमासा करने की आज्ञा प्रदान कर दी।

तीन मुनि चातुर्मास पर्यन्त ध्यान और तपस्या में रत रहे। इस बीच आने वाले परिषह और उपसर्ग को शांत भाव से सहन करके चौमासा पूर्ण करके गुरु चरणों में समुपस्थित हुए। गुरु ने अपने तीनों शिष्यों को साधुवाद दे गले लगाया। और उनकी सफलता पर बधाई देते हुए कहा- दुष्कर साधना करने वाले तपस्वियो? तुम्हारा स्वागत है।

उधर स्थूलभद्र कोशा वेश्या की चित्रशाला में चारमास रहे। षट रस व्यंजक खाए। किसी तरह का कोई कष्ट, उपसर्ग नहीं लेकिन कोशा वेश्या की काम याचना और भाव भंगिमा के बीच निःस्पृह, अडोल और अविचलित रहे। इतना ही नहीं धीरे-धीरे उस कोशा वेश्या को भी बारहव्रत धारिणी श्राविका बना लिया। यह बहुत कठिन कार्य था।

चातुर्मास समाप्ति पर स्थूलभद्र गुरु चरणों में पहुंचे तो गुरु ने प्रगाढ आलिंगन में लेते हुए कहा- अतिदुष्कर साधना करने वाले महान तपस्वी तुम्हारा स्वागत है।

यह सब देख सिंह गुफावासी मुनि को ईर्ष्या हुई। उसने मन ही मन सोचा हम तीनों इतनी घोर तपस्या करके आए उनको तो गुरुजी दुष्कर तप करने वाले बताते हैं और स्थूलभद्र कोशा वेश्या की चित्रशाला में रंग रंलियां मनाके आए हैं उन्हें अति दुष्कर तप करने वाले कहकर सम्मानित करते हैं यह गुरुजी का पक्षपात है। इस बार मैं वेश्या की चित्रशाला में चौमासा करके आऊंगा। फिर देखता हूं गुरुजी मुझे कितना प्रोत्साहन देते हैं।

अगले चौमासे का काल निकट आया। सिंह गुफावासी मुनि ने वेश्या की चित्रशाला में चौमासा करने की अनुमति मांगी। गुरु जी ने कहा हमको इसमें अनिष्ट की आशंका है। अतः उन्होंने मुनि को आज्ञा नहीं दी। वह मुनि बिना गुरु की आज्ञा के ही वेश्या की चित्रशाला में जा पहुंचा। अब वहां पर कामोद्दीपक वातावरण नहीं था। फिर भी वह मुनि वेश्या के प्रति आकृष्ट हो गया और उससे कामयाचना करने लगा। वेश्या ने मुनि को फटकारते हुए कहा कि तुम मुनि स्थूलभद्र की बराबरी करना चाहते हो और अपने मन पर तुम्हारा जरा भी नियंत्रण नहीं?

मुनि फिर भी गिड़गिड़ाता रहा, काम याचना करता रहा तब वेश्या बोली हमारे यहां आने वालों को टेक्स चुकाना पड़ता है। तुम अपनी परंपरा छोड़ सकते हो मुनि? लेकिन मैं अपनी परंपरा नहीं छोड़ूंगी। पहले मेरा खजाना भरो फिर आने की बात करूंगी। मुनि दीनस्तर में बोला कोशा मैं धन कहां से लाऊं। मैं तो अकिंचन हूं। वेश्या ने कहा- नेपाल नरेश नवागत साधुओं को रत्न कम्बल का दान देते हैं अगर आप वहां से रत्नकम्बल ला सको तो आपकी वह भावना पूरी हो सकती है।

कामान्ध मुनि ने कल्प, परंपरा, नियम सब ताक पर रखकर चौमासे में ही नेपाल देश जाने का निर्णय लिया। मार्गवर्ती कष्टों को सहन करते हुए नेपाल पहुंचे। निर्लज्ज भाव से नरेश के पास रत्नकम्बल की याचना की और कम्बल लेकर शीघ्र पाटलीपुत्र लौट आए। वह रत्नकम्बल ज्योंही कोशावेश्या के हाथ में थमाया, कोशा ने उस कम्बल के टुकड़े करके गंदी नाली के कीचड़ में फेंक दिए।

कामान्ध मुनि अब क्रोधित होकर कोशा को कहने लगे? मूर्खशिरोमणि यह तूने क्या किया? कितने परिश्रम से एक बहुमूल्य चीज को मैंने प्राप्त किया उसको तूने कीचड़ में डाल दिया?

कोशा ने मौका देखकर अब मुनि की अक्ल टिकाने लाने का प्रयत्न किया और बोली- महामुने? मैं अगर मूर्ख हूं तो आप महामूर्ख हैं। मैंने जिस रत्न कम्बल को कीचड़ में बहाया है वह तो फिर प्राप्त की जा सकती है। वह तो मूल्य से भी मिल जाती है लेकिन आप तो अमूल्य संयम को कीचड़ में बहाने के लिए तैयार हो गए। धिक्कार है आप की वासना को, जो श्रमण वेश के साथ श्रमणत्व को भी कलंकित कर रहे हैं।

श्राविका कोशा की फटकार सुनकर मुनि का विचलित मन पुनः संयम में स्थिर हो गया। वे लज्जित स्वर में बोले श्राविके? मैं तुम्हारा चिर कृतज्ञ हूं। तुमने मुझे पतन के गर्त से उबार लिया।

चातुर्मास पूर्ण होने पर वे अपने गुरु संभूत विजय के पास पहुंचे। अपने पतन का सारा हाल सुनाकर पापों का प्रायश्चित्त किया और आर्य स्थूलभद्र सचमुच महान योगी और अति दुष्कर कार्य करने वाले हैं इस बात पर उनको विश्वास हो गया। एक वेश्या ने पतनोन्मुख मुनि को उन्मार्ग से बचा लिया।

-संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

यह भोला सा इंसान ही ईश्वर की पहचान है
नफरत करें इंसान से, वो कैसा इंसान है।।

की ठगाई आपने, खुद अपने से भगवान से
इंसानों को जो ठगा, इसां ही भगवान है। (1)

जैन, बौद्ध, हिंदुओं! मुस्लिम ईसाई फारसी
ऊंचा कौन है धर्म से, कर्म ही महान है। (2)

भाइयों का खून पी, ऐश किया तो क्या किया
अपने हक में मस्त जो, वह सच्चा धनवान है। (3)

मानवता के मंच पे, कौन है छोटा बड़ा
दिल को दुखाना पाप है, सबके दिलों में जान है। (4)

बादशाह बजीर हो, सेठ साहूकार हो,
अंत में सब एक से, क्या मजदूर किसान है। (5)

तर्ज-तूने जो मेरी कब्र



एक तीर से अनेक शिकार

○ साध्वी कनकलता

धूमता हुआ नटों का एक काफिला एक नगरी में पहुंचा। निपुण नट मण्डली ने नगरी में अपने नृत्य की धूम मचा दी लोग मंत्र मुग्ध से दौड़े-दौड़े नृत्य देखने आते नाटक देखने में तल्लीन हो जाते। दर्शकों की तन्द्रा तब भंग होती जब नाटक की समाप्ति पर नटणी एक बांस पर चढ़ कर पैसों की याचना करती हुई कहती कि-

बांस चढ़ी नटणी कहै, हुयो न नटज्यो कोय,
मैं नटकर नटणी हुई नटे जो नटणी होय।

एक दिन नट मण्डली राज सभा पहुंची दरवारियों ने राजा से प्रार्थना की यह नटनी बहुत सुन्दर नाटक करती है। पूरी नगरी में संनृत्य की धूम मची हुई है। आप भी अपनी इच्छा जताएं, इनको नृत्य से मनोरंजन कराएं तो सारी प्रजा भी बड़ी खुश होगी।

राजदरवारियों की प्रार्थना पर कंजूस राजा ने नृत्य द्वारा दान देने से इन्कार करता रहा। आखिर प्रजा के अत्यधिक आग्रह डालने पर राजा को नृत्य की स्वीकृति देनी पड़ी। नट और नटणी ने उत्साह के साथ नृत्य प्रारंभ किया, तरह-तरह के कौशल लगे। दर्शकों के मुंह से वाह! वाह! कमाल की आवाजें उठने लगी। नट और नटणी ने राजा को मौन उदास बैठा देखा तो राजा को मौन देख कर नट और नटणी ने राजा को खुश करने के लिए नए-नए करतब दिखाने शुरू किए। अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी करते रहे एक तरफ दर्शकों की वाह! वाह! नट मण्डली में दम भर रही थी तो दूसरी तरफ राजा की उदासी उन्ही से तोड़ भी रही थी। राजा के मौन और उदास भाव देखकर नटणी ने नट से कहा-

रात घड़ी भर रह गई पिंजर था क्या जाय, यो राजा रीझे नहीं अंधरी ताल बलाय, हे नट अब रात बहुत कम रह गई प्रभात होने वाली है, मेरा शरीर नाचते थक कर चूर-चूर हो गया है। चाहे कितने कौशल दिखाओ लेकिन यह प्रसन्न होने वाला नहीं है। इसलिए अब नृत्य की ताल धीरे करो।

नटणी की बात सुनकर नट ने जबाब दिया-

घणी गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय,
नट कहे सुन नटणी ताल भंग क्यों धाय।

नट ने कहा- बहुत समय तो निकल गया अब तो बहुत कम रात अवशेष है। यह भी व्यतीत हो जाएगी। इसलिए अब इतने कम समय के लिए ताल भंग क्यों करें।

नृत्य देखती हुई राजकुमारी ने जब उसकी यह बात सुनी तो उसने अपने गले का मूल्य हार उतार कर नट की झोली में डाल दिया। राज सभा में एक ओर बैठा हुआ एक

सन्यासी भी नृत्य देख रहा था उसने जैसे ही नट के शब्द सुने उसका अन्तर मन झनझना उठा। और अपना रत्न कम्बल नट की ओर बढ़ा दिया। उसी सभा में राज कुमार भी मौजूद था। नट के शब्दों से उसे भी कर्तव्य का भान हुआ और अपना कीमती दुपट्टा नट को दे दिया।

यह सारा दृश्य देखकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। गुस्से में आकर राजा ने राज कुमारी से पूछा पुत्री क्या यह अमूल्य हार किसी प्रकार देने की वस्तु है? राज कुमारी ने कहा- मेरा अविनय माफ हो। आपने अपनी लोभ वृत्ति के कारण युवावस्था होने पर भी अभी तक मेरी शादी नहीं की और मैं प्रतीक्षा करती रही। आखिर प्रतीक्षा की भी हद होती है। युवावस्था के जोश में आकर रात को बहू मूल्य हीरे जवाहरात लेकर प्रधान अमात्य के पुत्र के साथ जाने वाली ही थी कि नट के इन शब्दों से 'बहुत गई, थोड़ी रही, थोड़ी अब जाय' मुझे बोध हुआ कि बहुत उम्र बाकी बीत चुकी है थोड़ी शेष है वह भी बीत जाएगी। अब इतने कम समय के लिए मुझे ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए आपके मानस में पीड़ा न हो और राज न भंग हो इसलिए मैंने ऐसा नहीं किया। नट के वाक्यों से शिक्षा मिलती है। इसलिए नट मेरे शिक्षा गुरु है और मैंने प्रसन्न होकर अपने गुरु को दक्षिणा दी है।

राजा ने संन्यासी की ओर देखा- संन्यासी ने कहा- गुस्ताखी माफ हो राजन्। मैं वाल्यावस्था में वेदना के कारण संन्यास के पथ पर आ गया था। अब इसी जवानी जोश में आकार सोचा गृहस्थ जीवन में रहकर जीवन के सारे आनन्द भोगतूँ। इसी पर से मैं पुनः अपने घर जा रहा था। रास्ते में नट को देखकर मन ललचा उठा और देखने लग गया। अन्त में नट के इन शब्दों से विवेक बुद्धि जागृत हो उठी और मैं भोगों के कीचड़ से मुड़ कर पुनः संयम में स्थिर हूँ। अतः नट को अपना गुरु समान कर तुच्छ सी भेंट अर्पित की है। राजा ने राजकुमार से पूछा- बेटा तुमने अपना कीमती दुपट्टा नट को क्यों दिया? राजकुमार ने कहा- पिताजी मेरा अपराध क्षमा करें। मेरे भी एक पाप पल रहा था मैंने सोचा पिताजी बूढ़े हो गए हैं पर राज गद्दी को छोड़ते ही नहीं और चिपके बैठे हैं। अब राज्य करने का मेरा एक पाप अपनी लोभवृत्ति के कारण मुझे अपने अधिकार से वंचित रख रहे हैं। अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए आज आपको मारने की तैयारी कर रहा था। लेकिन नट के इन वाणी मुझे सद्बुद्धि मिली- मैंने सोचा गद्दी कि लिए मुझे धृष्ट और निकृष्ट कार्य नहीं करना चाहिए पिताजी अब कितने समय के हैं इनकी तो अब सन्ध्या की बला है। अच्छा है ये हैं जितने सिर पर भार नहीं है। ऐसी हित शिक्षा होने से खुश हो मैंने नट को दुपट्टा भेंट किया है।

ये सारी बातें सुनकर राजा को लोभ वृत्ति पर बड़ी ग्लानि हुई। नटों को यथोचित दान देकर राजा ने सबसे पहले सुयोग्य वर देखकर राजकुमारी की शादी की उसके बाद राजकुमार का राज्याभिषेक करके अपने उत्तरदायित्वों से निवृत्त होकर शेष जीवन को आत्म साधना में लगाया।

**कितना बढ़ता है विज्ञान, चन्द्र लोक तक पहुंच गए है,
करते अनुसंधान।**

पक्षी सम नर गगन बिहारी, तैरते मीन गति अनुहारी,
पल में खबरे आती सारी, टेलिविजन घर-2 जा सारी,
रेडियो, आटोग्राफी और लगे फौन मकान।

बिजली यंत्र मशीन चलाते, कूलर, एसी, हवा सुहाते,
सुन्दर कारें दौड़ी जाती, प्लेन यात्रा भी मन भाती,
हिसाब लिख ने की न जरूरत, कम्प्यूटर पर है ध्यान।

नलको के अब मुँह खुल जाते, गंगा सागर दौड़े आते,
कपड़े धोने मशीन चलाते, भोजन यंत्रों से पक जाते,
फिर भी शान्ति जरा नहीं मन में, तन पीड़ित परेशान।

शस्त्र बना रहे प्रलयकारी, होड़ लगी है सब में भारी,
है संशकित दुनिया सारी, मैत्री भाव रखो संसारी,
करुणा भाव रखो सब मंजू सुख शान्ति वरदान।

तर्ज- कितना बदल गया इन्सान

मंगल को पृथ्वी के प्रदूषण से बचाना होगा

मंगल पर जीवन को मौजूदगी के बारे में तरह-तरह कयासों के बावजूद कुछ वैज्ञानिकों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि मनुष्य का अति उत्साह मंगल के कुदरती जीवन को नष्ट कर सकता है। ये वैज्ञानिक लाल ग्रह को पृथ्वी के जैविक प्रदूषण से बचाने के लिए नई नीतियां तय करने पर जोर दे रहे हैं। मंगल की जांच-पड़ताल के तौर-तरीकों पर चली बहस का सबसे बड़ा मुद्दा यह है कि मंगल को प्रदूषित होने से कैसे बचाया जाए। वैज्ञानिकों का कहना है कि मंगल पर जाने वाले अंतरिक्ष यान अपने साथ पृथ्वी के जीवाणु ले जा सकते हैं। इन जीवाणुओं से मंगल का मौलिक जीवन प्रदूषित हो सकता है।

सत्तर के दशक में मंगल पर भेजे गए दो वाइकिंग यानों को इस कदर स्टरलाइज किया गया था कि पृथ्वी का कोई भी जीवाणु मंगल को प्रदूषित न कर सके। लेकिन बाद में मंगल की विषम परिस्थितियों को देखते हुए नियमों में ढील दी गई। मंगल की यात्रा पर गए अनेक यानों के जरिए अनगिनत जीवाणु भी वहां पहुंचे। यह सही है कि यानों के बाहरी हिस्सों पर मौजूद जीवाणु अत्यंत तीव्र अल्ट्रा वॉयलेट रेडिएशन की चपेट में नष्ट हो गए होंगे, लेकिन यानों के भीतर कुछ ऐसे जीवाणुओं की मौजूदगी संभव है, जो अपनी सुप्त अवस्था में हजारों वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। 1990 में मार्स पोलर लैंडर लाल ग्रह के दक्षिणी ध्रुव पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस दुर्घटना के बाद यान के अंदरूनी हिस्से मंगल की बर्फीली मिट्टी से सीधे संपर्क में आ गए होंगे। नासा के प्लेनेटरी साइंटिस्ट क्रिस्टोफर मिके ने साइंस मैगजीन के ताजा अंक में मंगल के जीवन को बचाने की जरूरत बताई है। उनका मानना है कि मंगल पर पृथ्वी के जीवाणु मौजूद हैं। यदि वहां मौसमी परिस्थितियों में बदलाव आता है या मनुष्य मंगल के पर्यावरण में जानबूझकर परिवर्तन करना है तो वहां पृथ्वी के जीवाणु सक्रिय हो सकते हैं।

मंगल की खोजबीन के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश

पेरिस स्थित कमिटी ऑन स्पेस रिसर्स (कोस्पार) द्वारा तय किए जाते हैं। कमिटी यह तक करती है कि मंगल यात्रा पर जाने वाले अंतरिक्ष यान पर जीवाणुओं की कितनी मात्रा वाजिब होगी। इन्हीं नियमों के चलते नासा के फीनिक्स यान की रोबोटिक भुजा को स्टरलाइज किया गया था और लैंडिंग होने तक उसे एक सुरक्षा आवरण के अंदर रखा गया था। नासा वैज्ञानिक मिके का कहना है कि कोस्पार स्थित



कमिटी को अपने नियम बदलने होंगे, क्योंकि ये नियम मंगल के जीवन को संरक्षित रखने के हिसाब से तय नहीं किए गए थे। हो सकता है कि हमें ऐसा कठोर नियम बनाना पड़े, जिनमें भविष्य में होने वाले अंतरिक्ष अनुसंधानों को प्रदूषण के सभी चिन्हों को नष्ट करने के लिए कहा जाए।

यही तभी संभव है जब पुरानी लैंडिंग साइट्स पर वापस लौटकर वहां छूटे हुए यान के उपकरणों को रिकवर किया जाए या उन्हें नष्ट कर दिया जाए। नए नियमों में मनुष्य को मंगल की अंधेरी गुफाओं में अड्डे बनाने से रोकने का प्रावधान भी किया जा सकता। इन गुफाओं में पृथ्वी के साजोसामान के साथ चिपके हुए जीवाणु समुचित सूरज की रोशनी के अभाव में नष्ट नहीं हो पाएंगे। मिके का कहना है कि भविष्य में कोई रोबोटिक अथवा मानव मिशन मंगल का सतह पर खुदाई करता है तो हमें यह भी ध्यान देना पड़ेगा कि जमीन के अंदर जाने वाले उपकरण ठीक से स्टूलाइज किए जाएं। अंतरिक्ष अनुसंधान के नए नियम बृहस्पति के चंद्रमा यूरोपा और शनि के चंद्रमा टाइटन जैसे जीवन संभावित खगोलीय पिंडों पर भी लागू करने पड़ेंगे। कोस्पार और अन्य अंतरिक्ष संगठनों के विशेषज्ञों की एक बैठक इसी साल सितंबर में होगी, जिसमें मंगल अनुसंधान के नैतिक प्रश्नों पर विचार किया जाएगा।

—प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

गजल

जब किसी से कोई गिला रखना,
सामने अपने आईना रखना।
यूं उजालों से वासता रखना,
शम्मा के पास ही हवा रखना,
घर की तामीर चाहे जैसी हो,
इसमें रोने की कुछ जगह रखना।
मस्जिदें हैं नामाजियों के लिए,
अपने घर में कहीं खुदा रखना।
मिलना-जुलना जहां जरूरी हो,
मिलने-जुलने का हौसला रखना।



If feel complaining about something. Someone,
do it after 24 hours of introspection.

—निदा फैजली

हमारा पर्यावरण

सैलानी पक्षियों को रास आई दिल्ली की सर्दी

बुराड़ी के नैचरल जंगल में आए हजारों पक्षी

कड़ाकेदार सर्दी भले ही आजकल दिल्ली वालों की जान हलकान कर रही हो, लेकिन यहां आने वाले सैलानी पक्षियों को यह सर्दी स्वर्ग का आनंद दे रही है। बुराड़ी स्थित एक नैचरल जंगल में हजारों विदेशी पक्षी डेरा डाले हुए हैं। इस जंगल के विज्ञानी हैरान हैं कि इस बार ऐसे पक्षी भी यहां बहुतायत में आए हैं, जो दिल्ली की आबोहवा दूषित मानकर यहां बहुत कम लैंड करते हैं। लेकिन इस बार इन पक्षियों का पार्क में किलोल चल रहा है और चहचहाते पक्षी विज्ञानियों को गद्गद कर रहे हैं। करीब एक दर्जन प्रजातियों के पक्षियों ने इस जंगल को गुंजार कर रखा है।

दिल्ली यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ एनवायरनमेंट स्टडीज और डीडीए द्वारा करीब 457 एकड़ में विकसित यमुना बायोडायवर्सिटी पार्क में आजकल करीब 4 हजार सैलानी पक्षियों ने डेरा डाल रखा है। करीब 12 प्रजातियों के ये प्रवासी पक्षी यहां झील में किलोल कर रहे हैं, आसपास के पेड़ों पर चहचहा रहे हैं और जब मन किया, दाएं-बाएं उड़कर वापस विमान की तरह लैंडिंग कर रहे हैं। दिल्ली की यह एकमात्र ऐसी झील है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में विदेशी पक्षी उड़ान भर रहे हैं। विशेष बात यह है कि दिल्ली में ओखला बर्ड सेंचुरी और पास ही गुडगांव में सुल्तानपुर पक्षी आवास भी है, लेकिन वहां पक्षियों की संख्या इस पार्क से बहुत कम है। इन पक्षियों में साइबेरिया, उत्तरी चाइना, कुछ युरोपीय देशों सहित हिमालय क्षेत्र में रहने वाले पक्षी भी मौजूद हैं। करीब सात एकड़ में बनी यह झील आजकल इन प्रवासी पक्षियों की आरामगाह बनी हुई है। पक्षियों के नाम भी एक से एक हैं, जैसे रेड क्रिस्टेड पोचार्ड (लालसर), यूरोपिन विजन (तिलकधारी बत्तख), कॉमन पोचार्ड, पिन टेल, टफरेड, गैडवाल, नॉर्दर्न शॉब्लर, स्वांप हेन, स्पॉट डक बिल, स्नेक बर्ड आदि। पार्क में हिमालय क्षेत्र में रहने वाले पक्षी ब्लू थ्रोट, रेड ब्रेस्टेड फ्लाई केचर और वर्टिवियर फ्लाई केचर भी आए हुए हैं।

विशेष बात यह है कि ये पक्षी यहां सिर्फ मौज-मस्ती के लिए आते हैं। ये यहां पर न तो अंडे देते हैं और न ही बच्चे पैदा करते हैं। पार्क में ये खूब खाते-पीते हैं और मौसम में बदलाव होते ही वापस अपने 'वतन' की ओर उड़ जाते हैं। पार्क के इंचार्ज और वन्यजीवन विज्ञानी डॉ. फैयाज खुदसर के मुताबिक, पार्क में इस बार लालसर नाम के पक्षी इफरात में आए हुए है। ये पक्षी बहुत ही संवेदनशील होते हैं और जिस जंगल या झील

में प्रदूषण हो, वहां डेरा नहीं डालते। ऐसे में, इनकी मौजूदगी खासी हैरानी पैदा करने वाली है। इसका यह मतलब है कि पार्क में पर्यावरण संतुलन खासा सुधर रहा है। उन्होंने बताया कि असल में यहां आसानी से भोजन और अनुकूल वातावरण मिलने के कारण इन सैलानी पक्षियों का आना हर साल बढ़ रहा है।

इस साल करीब 4 हजार पक्षी यहां दर्शन दे चुके हैं। उम्मीद है कि सर्दी का दौर जारी रहा, तो पक्षियों की संख्या में और इजाफा हो सकता है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि साल 2002 में जब यह पार्क विकसित किया गया था तब यहां पर पक्षियों की करीब 30 प्रजाति थी, अब उनकी संख्या बढ़कर 175 से अधिक हो गई है। इसका कारण यह है कि झील, छोटी नदी और पार्क में जो वनस्पतियां उगाई गई हैं, उन्हें पक्षी चाव से खाते हैं। पार्क में ये पक्षी 12 महीने निवास करते हैं, जो अमूमन दिल्ली में पाए जाते हैं। इनमें कई प्रजाति की मुनिया, तोते, ग्रीन पिजन (हरियल), चीलू, छोटे बाज और छोटी मुर्गावी भी शामिल है। इतना ही नहीं, बाग में जंगली खरगोश, जंगली बिल्ली और सात प्रजाति के सांप भी इफरात में मौजूद हैं।

-नवभारत टाइम्स से साभार

चुटकुले



1. एक आदमी कुएं में गिर गया। उसे बचा लिया गया। ऊपर लाकर लोग उसे मुंह के बल लिटाकर उसके पेट और फेफड़ों से पानी निकालने लगे। थोड़ी देर बाद वह बोला- मुझे प्यास लगी है।
2. एक स्टूडेंट का स्टेटस मैसेज जब भी में अपनी किताबों के साथ प्यार में पड़ना चाहता हूं। मेरी रजाई और बैड को मुझसे प्यार हो जाता है।
3. विजय : ऑक्सफोर्ड का मतलब मालूम है?

विनय : हां, ऑक्स मतलब बैल, फोर्ड मतलब गाड़ी तो, ऑक्सफोर्ड

मतलब बैलगाड़ी।

4. चन्दन : मैं सामने वाली इमारत पर बिना हांफे चढ़ सकता हूं।

प्रवीण : नहीं चढ़ सकते हो।

चन्दन : अगर चढ़ गया तो क्या दोगे?

प्रवीण : धक्का।

स्वास्थ्य

सतर्क रहें कैंसर से बचे

शरीर के किसी भाग की कोशिकाओं का अनियंत्रित विभाजन एक सीमा से बाहर होने पर शरीर एवं उसकी कार्यप्रणाली को प्रभावित कर यह मृत्यु तक का कारण बन सकता है। कोशिकाओं का यह अनियंत्रित विभाजन ही कैंसर कहलाता है। यदि आरंभिक स्तर पर ही इसके विषय में पता चल जाए तो इसका इलाज संभव है पर यदि यह अपने अंतिम चरण (एडवांस स्टेज) में पहुंच जाता है तो इसे नियंत्रित करना मुश्किल ही नहीं, वरन असंभव भी हो जाता है। अभी तक इसकी कोई कारगर दवा भी सामने नहीं आई है। दवा आदि के अभाव में चिकित्सक एवं वैज्ञानिक बचाव के उपायों पर ही अधिक बल दे रहे हैं।

भोजन :-

विशेषज्ञ मैरिन नेस्टले का कहना है कि कैंसर की आशंकाओं को कम करने के लिए ज्यादा फल एवं सब्जियां खाना प्रथम महत्वपूर्ण कदम है। टमाटर, हरी सब्जियां आदि स्तन, पेट, फेफड़े, बड़ी आंत, अंडाशय, मूत्राशय, मुंह आदि में कैंसर की आशंकाओं को कम कर देता है। इन हरी सब्जियों में उपस्थित विटामिन खनिज और रेशे (फाइबर) इसमें सहायक होते हैं। खाद्य पदार्थ को खाने के अलावा उनके रख-रखाव, संरक्षण एवं प्रोसेसिंग की ओर भी ध्यान देना चाहिए। अक्सर खाद्य पदार्थों को संरक्षित करते हुए या पकाते हुए उनमें उपस्थित अनेक लाभकारी तत्व नष्ट हो जाते हैं अतः ताजी सब्जियों एवं फलों का सेवन अधिक लाभकारी है। हल्का पका हुआ या कच्चा खाना ज्यादा उपयोगी है। जहां तक मीट, मछली मांसाहार का प्रश्न है, उसे तलने की जगह रोस्ट करके या भूनकर खाने से शरीर में वसा का कम जमाव होता है। कोयले के ऊपर सेंकी गयी खाद्य सामग्री खाने से परहेज करना चाहिए, क्योंकि इससे कैंसरजैनिक टार निकलता है जो पेट और गले की नली में कैंसर की आशंकाओं को बढ़ाता है।

इन आदतों से रहें सावधान

धूम्रपान : मुंह, त्वचा, फेफड़े, गले की नली आदि में कैंसर होने का एक मुख्य कारण हो सकता है। अतः धूम्रपान न करें।

अप्रत्यक्ष धूम्रपान : यदि आप स्वयं धूम्रपान नहीं करते पर आपका प्रत्यक्ष संपर्क उन व्यक्तियों से है, जो धूम्रपान करते हैं तो उसके धुएं से आपको कैंसर होने की आशंका बढ़ जाती है।

सूर्य की किरणें : धूप में चलते समय आपकी छाया आपसे छोटी है तो इसका अर्थ है कि सूर्य बिल्कुल आपके ऊपर है। ऐसे में सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणें बहुत प्रभावकारी होती है। ये त्वचा को हानि पहुंचाकर त्वचा के कैंसर के लिए उत्तरदायी हो सकती है। अतः

जहां तक संभव हो, छाया में रहें। सनस्क्रीन क्रीम या लोशन का प्रयोग त्वचा की बचाव कार्यप्रणाली को नुकसान पहुंचा सकता है। अतः इन पर भरोसा करने की बजाय छाया में रहना अधिक उपयोगी है।

शराब का सेवन

शराब का सेवन विभिन्न प्रकार के कैंसर की आशंकाओं को बढ़ा देता है। अतः या तो इसका सेवन बंद कर दें अन्यथा एकदम कम कर दें।

शरीर का वजन एवं मोटापा : अधिक मोटापा एंडोमेटेरियम के कैंसर को एवं रजोनिवृत्ति के बाद स्तन कैंसर की आशंकाओं को बढ़ा देता है।

शारीरिक संबंध : एक से अधिक व्यक्तियों के साथ शारीरिक संबंध बनाना, गुप्तोंगों से वायरस आदि का संक्रमण भी सरविक्स के कैंसर को बढ़ाता है।

विद्युत चुंबकीय किरणों का प्रभाव : हालांकि अभी पूर्ण रूप से यह सिद्ध नहीं हुआ है परंतु वैज्ञानिक इस आशंका से इन्कार नहीं कर रहे हैं, कि विद्युत चुंबकीय किरणें मस्तिष्क की कोशिकाओं को प्रभावित कर मस्तिष्क कैंसर का कारण बन सकती है।

क्या आपको कैंसर होने की आशंका है?

कुछ भागों के कैंसर जैसे स्तन, बड़ी आंत एवं अंडाशय का कैंसर आनुवांशिक हो सकते हैं। अतः डॉक्टर से समय-समय पर स्क्रीनिंग यानी जांच करवाते रहें। युवतियों, जिनके परिवार के किसी सदस्य को अंडाशय का कैंसर है, उन्हें सावधानी के तौर पर गर्भ-निरोधक गोलियों लेनी चाहिए। शोधकर्ताओं के अनुसार जो युवतियां इन गोलियों का इस्तेमाल करती हैं, उनमें अंडाशय एवं एंडोमेटेरियम के कैंसर की आशंका एकदम कम हो जाती है। कैंसर की आशंका वाली स्त्रियों के लिए टेमोक्सीफिन नामक दवा लाभकारी हो सकती है। हालांकि यह दवा गर्भाशय के कैंसर की आशंका को बढ़ाती है।

‘प्रोस्कर’ एक अन्य दवा है जिस पर अभी कार्य हो रहा है। हालांकि ‘टेमोक्सीफिन’ की तरह यह कोई अन्य कैंसर को नहीं पनपने देती पर इसके साइड इफेक्ट हैं जैसे 5 प्रतिशत पुरुषों में जिन्होंने इसका उपयोग किया, उनकी प्रजनन क्षमता में कमी आ गई। कैंसर विशेषज्ञों की सलाह है कि कैंसर की आशंका कम करने के लिए बचाव सबसे उत्तम तरीका है। अगर कैंसर के कोई भी लक्षण दिखें जैसे, किसी घाव का न भरना, अधिक एवं असामयिक रक्तस्राव होना, स्तन के आसपास या कहीं गांठ का बनना, अपाचन या निगलने में कठिनाई आना, गले में खरखराहट होना एवं उसका बंद न होना, आदि तो अपने डाक्टर से संपर्क करें।

—प्रस्तुति : अरुण तिवारी

○ डॉ.एन.पी. मित्रल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ रहेगा। इस माह कोई नई योजना फली भूत हो सकती है, कोई पिछला रूका हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। समाज में यश मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। परिवारिक जनों का सहयोग रहेगा। किन्हीं सरकारी कर्मचारियोंकी पदोन्नति भी सम्भव है। सेहत के प्रति सचेत रहना होगा। **वृष-वृष** राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अड़चनों के बाद शुभ फल देने वाला है। कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। शत्रु सिर उठाएंगे। मानसिक स्थिरता बनाए रखें। आय से अधिक खर्च होगा चाहे सुख साधनों पर ही क्यों न हो। आपके आप पास ऐसी स्थितियां बनेंगी कि आपको क्रोध आयेगा-अपने क्रोध पर काबू रखें, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्ययधिक्य देने वाला है। स्वभाव में भी क्रोध का असर रहेगा। मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इस माह का केवल प्रथम सप्ताह कुछ शुभ प्रदायक है जिसमें कोई शुभ सूचना मिल सकती है। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। परिवार जनों से विचार भिन्नता के कारण मानसिक उद्विगना रहेगी। यह पूरा महीना व्यावहारिक स्थिति से तथा आर्थिक दृष्टि से उतार-चढ़ाव लिये हुए होगा। कानून के भी कुछ झंझट उठ सकते हैं और शत्रु भी परेशान कर सकते हैं जिसका समझौते के रूप में मास के अन्त तक हल निकलने की सम्भावना है।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर अच्छा ही कहा जाएगा। परिवार व कुटुम्बजनों में असामन्जस्य रहेगा किन्तु बाद में मेल जोल का वातावरण बन जाएगा। इस माह का उत्तरार्ध अधिक शुभ फलदायक है। समाज में मान प्रतिष्ठा, व यश की वृद्धि होगी। कोई शुभ समाचार मिल सकता है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में अच्छा फल देने वाला है। वैसे स्वभाव में क्रोध अधिक रहेगा। शुभ परिणामों के लिये क्रोध पर काबू रखना होगा। परिवार जनों में असामन्जस्य सम्भावित हैं, कोई बीच का रास्ता निकालें। खाने पीने के मामलों में बदपरहेजी स्वास्थ्य हानि कर सकती है।



तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक परिश्रम द्वारा लाभ कराने वाला है। काफी दौड़ धूप करनी पड़ेगी। संगी साथी भी काम में मदद देने लगेगे। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। स्वजनों से वैर-विरोध होकर सुलह होने के आसार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से छोटी मोटी बीमारी होगी जो ठीक हो जाएगी।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह मिला जुला प्रभाव लिये हुए होगा। नये लोगों से सम्पर्क बनेंगे। खर्च की कुछ अधिकता रहेगी। मानसिक चिन्ता रहेगी। इस माह का आखिरी सप्ताह इन जातकों के लिये शुभ कहा जा सकता है। घर में कोई मांगलिक कार्य सम्भावित है। अचानक कहीं से पैसा भी मिल सकता है। इन जातकों को अपनी सेहत के प्रति सचेत रहना होगा।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से शुभ फलदायक है। माह के आरम्भ से ही व्यापार वृद्धि गोचर होने लगेगी। बड़े लोगों से मेल जोल होगा। परिवार जनों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ लोग बहकाने की कोशिश कर सकते हैं, उनकी बातों में न आएँ।

मकर-मकर राशि के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आर्थिक दृष्टि से तृतीय सप्ताह में अति शुभफलदायक है जब कि बाकी सप्ताहों में लाभ तो होगा पर कोई न कोई अनावश्यक खर्च भी होगा। परिवार के लोगों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान, यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ कानूनी अड़चनें आयेंगी मगर दूर हो जायेंगी। कुछ जातक राजनीतिक सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। वाहन चलाने में सावधानी बरतें।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अवरोधों के पश्चात अल्प आर्थिक प्राप्ति का है। केवल प्रथम सप्ताह फिर भी संतोषजनक फल दायक है। भूमि भवन के मामलों में सचेष्ट रहना होगा। अपने ही प्रतिकूल व्यवहार करेंगे। मानसिक रूप से चिन्तित रहेंगे। कोई बीमारी आपको घेर सकती है। अनाप-शनाप चीजें खाने से बचें। इस माह में ये जातक कोई नया कार्य हाथ में न लें।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर अच्छा फल देने वाला है। परिश्रम तो अधिक करना पड़ेगा किन्तु लाभ मिलेगा। कोई नई योजना भी कार्यान्वित हो सकती है। इस माह का प्रथम सप्ताह शुभ फल दायक नहीं है, अन्य तीनों सप्ताह अच्छे रहेंगे। शत्रु सिर उठायेंगे किन्तु विजय इन जातकों की ही होगी। बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करें। आत्म विश्वास बनाएँ रखें।

-इति शुभम्

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी, पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी तथा सरलमना साध्वी मंजुश्रीजी अपने सहयोगी साधु-साध्वियों के साथ जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली में सानन्द विराजमान हैं। सेवा, शिक्षा और साधना की प्रवृत्तियां निरंतर प्रगति पर है। भारत के सभी प्रांतों से एवं विदेश से श्रद्धालु-जनों के आने का तांता लगा रहता है।

यूक्रेन का श्रद्धालु विदेशी प्रतिनिधि-मंडल जैन आश्रम में

17 जनवरी 2011 को पूज्यवर के सान्निध्य में यूक्रेन से 50 सदस्यीय विदेशी श्रद्धालु प्रतिनिधि मंडल जैन आश्रम, नई दिल्ली में पहुंचा। पूज्य गुरुदेव की जय हो, आचार्यश्री रूपचन्द्रजी की जय हो, के जय-नाद के साथ जब इस विदेशी ग्रुप ने आश्रम में प्रवेश किया तो ऐसा लगा हरियाणा, पंजाब अथवा राजस्थान के किसी शहर से श्रद्धालुओं का कोई संघ आया हो। यूक्रेन के लोगों में यह श्रद्धा-भक्ति भरने में प्रमुख माध्यम बने डॉ. सोहनवीर सिंह, जो पूज्यवर के मिशन के साथ यहां दिल्ली के चिकित्सा-सेवा-कार्यों से कई वर्षों से जुड़े हैं। पिछले वर्ष यूक्रेन में बसे डॉ. हरप्रीत जी के आमंत्रण पर वहां योग और आयुर्वेद-शिविरों के लिए डॉ. सोहनवीर सिंह पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से यूक्रेन गए। डॉ. हरप्रीत जी ने अनेक शहरों में उनके योग-आयुर्वेद शिविर आयोजित किये जो बहुत सफल तथा प्रभावशाली रहे। डॉ. सोहनवीर सिंह ने उस शिविरों में मानव मंदिर मिशन तथा पूज्य गुरुदेव के मनीषी तथा संत-व्यक्तित्व के बारे में बताया, जिसे सुनकर वे सहज ही श्रद्धा-न्त हो गए।

पूज्यवर ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा- मानव देह में हैं। हमारे पास विचार-शक्ति है। इसलिए हमें तय करना है हमारे जीवन का उद्देश्य क्या हो। आपने कहा- हमारा उद्देश्य हमारे भीतर बैठे पशुओं पर विजय पाना तथा हमारे भीतर विराजमान देवत्व को जगाना, यही होना चाहिए। पूज्यवर के प्रवचन का यूक्रेनियन भाषा में अनुवाद डॉ. हरप्रीत जी ने किया। पूज्यवर ने कहा- हमारे योग-प्रशिक्षक डॉ. सोहनवीर सिंह ने डॉ. हरप्रीत जी के सहयोग से आपके बीच प्रशंसनीय कार्य किया है। पूज्यवर के प्रवचन से पूर्व पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने कहा- आज आपको जीवन की वह खुराक मिलने वाली है जो आपके उम्र-भर काम आएगी। समागत प्रतिनिधि-मंडल के पुरुष-सदस्यों ने पूज्य गुरुदेव से तथा महिला सदस्यों ने पूज्या साध्वीश्री से आशीर्वाद लिया। सभी सदस्यों के हृदय गद्गद् थे। मंत्रोच्चारण, प्रवचन तथा आशीर्वाद के समय अनेकों की आंखों आंसुओं से सजल थी। आश्रम का प्रसाद भी सभी ने बड़े श्रद्धा-भाव से ग्रहण किया। विदाई भी जय-घोष के साथ ली।

श्रीमती शांता करई 'काकी' का देहावसान



जीवन का शाश्वत सत्य है मृत्यु। मृत्यु अवश्यंभावी है। जन्म के साथ मृत्यु भी निश्चित होती है। अमीर-गरीब, पढ़े-लिखे, अनपढ़ सब समय आने पर मरते हैं। लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो मरकर भी अमर हो जाते हैं। उन्हीं व्यक्तित्वों में से एक नाम है रिटायर्ड मेजर जनरल के.के. करई की धर्म पत्नी श्रीमती शान्ता करई जो

'काकी' उपनाम से सुप्रसिद्ध थी। बड़े-बूढ़े बच्चे सब उन्हें प्यार से काकी बुलाते थे। काकी के परिवार का करीब 9-10 वर्ष पहले डॉ. जोश के समय मानव मंदिर परिवार से सम्पर्क हुआ था। बस एक बार सम्पर्क क्या हुआ, वह हमेशा के लिए एक स्नेह का बंधन बन गया। काकी के परिवार की मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चों के लिए जो सेवा रही है वह अविस्मरणीय है। ऐसी मूक सेवा करने वाले तो करोड़ों में एक मिलेंगे। गुरुकुल के बच्चे आज जिस मुकाम पर आगे बढ़ रहे हैं उनके विकास में काकी के परिवार का योगदान स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। काकी का आश्रम के एक-एक बच्चे, पूज्य गुरुदेवश्री, पूज्या साध्वीश्री आदि पूरे मानव मंदिर परिवार के साथ एक ऐसा स्नेह पूर्ण रिश्ता था जो उनके जाने के बाद भी सदा बना रहेगा। काकी का पूरा परिवार जनरल साहब, भाई सुमीर, बहन सुमन तथा सीमा आदि प्रभु सह आघात सहने की सामर्थ्य प्रदान करें। पूज्य गुरुदेवश्री व सारे साधु साध्वी समुदाय गुरुकुल के बच्चे व पूरा मानव मंदिर परिवार काकी की आत्मा के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता है।

श्री पवन राजलीवाल का निधन

यह संसार जन्म मरण का एक चक्र है। जिसमें जो प्राणी जन्म लेता है। उसे एक न एक दिन जाना ही होता है। यह जीवन की सच्चाई है। जिसे हम मृत्यु समझते हैं। वह जीवन है, और जिसे जीवन समझते हैं वह मृत्यु है। क्योंकि आत्मा का रूपांतरण है, बचपन यौवन, वृद्धावस्था हैं। इसी तरह हम नया जन्म लेते हैं। जैसे कि हिसार में राजलीवाल परिवार बहुत प्रसिद्ध है। ये चार भाई हैं। जिनमें सबसे बड़े मांगेराम जी, श्री द्वारका प्रसाद जी, श्री दीप चंद जी और श्री रघुवीर जी। जिनमें द्वारका प्रसाद जी का सुपुत्र पवन जी का एक लम्बी बीमारी के बाद पिछले दिनों दिल्ली के एक हॉस्पिटल में निधन हो गया। कुछ दिन पहले रघुवीर जी के बेटे का भी निधन हो गया था। पवन जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी जी को बहुत धैर्य और शांति रखनी है। श्रीमान पतराम जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला जी को भी हिम्मत रखनी होगी। क्योंकि सबकी जिम्मेवारी रखने वाले ये ही है।

इस परिवार की गुरुदेव जी के प्रति काफी श्रद्धा है। गुरुदेवश्री जी ने फरमाया कि पूरे परिवार को मोहाकुल न होकर सहज और शांत रहना है। क्योंकि मोहाकुलता कर्मबंध का कारण बनती है फिर जन्म मरण की श्रृंखला को बढ़ाती है।

साध्वी मंजुलाश्री जी और साध्वी मंजू श्री जी की भी सभी को यही प्रेरणा है कि सब शांत रहे और अपने कर्तव्य का पालन करें। और श्रीमती सरला देवी साधु-संतों की खूब सेवा करती है और वैसी ही करती हैं। दिवंगत आत्मा को परमात्मा का आशीर्वाद सदा मिलता रहे, यही मंगल कामना।



-पूज्य गुरुदेव जी के साथ आशीर्वाद मुद्रा में ग्रुप फोटो खिचवा कर श्रद्धालु-समुदाय अपना अहोभाव प्रकट करते हुए।



-डॉ. हरप्रीत एवं डॉ. सोहनवीर सिंह पूज्य गुरुदेव के चरणों में अपना भाव प्रकट करते हुए। आप दोनों ने ही पूज्य गुरुदेव का अध्यात्मिक संदेश यूक्रेन में जाकर फैलाया। आज हजारों विदेशी पूज्य वर के संदेशों और शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार रहे हैं।



-मानव मंदिर दिल्ली में पूज्य गुरुदेव का जयघोष करते यूक्रेन से समागत श्रद्धालु भक्त-गण।



-समागत प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य जैन आश्रम के प्रसाद को श्रद्धा-भाव से ग्रहण करते हुए।



-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज जी मानव मंदिर सभागार में मंत्रों का उच्चारण करते हुए। साथ में हैं सौरभ मुनि।



-पूज्य गुरुदेव के मंत्रोच्चारण के समय ध्यान-लीन यूक्रेन से आये विदेशी श्रद्धालु-जन।



-पूज्य गुरुदेव अपना मंगल प्रवचन करते हुए। साथ में हैं संध प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज, साध्वी कनकलताजी, साध्वी समताश्री जी एवं साध्वी वसुमती जी।



-मानव मंदिर दिल्ली में पूज्य गुरुदेव के प्रवचन की ज्ञान गंगा में आत्मविभोर होकर डुबकी लेते हुए यूक्रेन के भक्तगण।



-एक-एक क्रम-बद्ध होकर पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए यूक्रेन के भक्त-जन ।



-यूक्रेन की महिलाएं संघप्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करती हुईं ।